मददगार हाथ: समावेशन का एक अलग दृष्टिकोण

सरला मोहन राज

"अगर कोई बच्चा हमारे पढ़ाने के तरीके से नहीं सीख रहा तो शायद हमें उसके सीखने के तरीके से पढ़ाना चाहिए"। अधिगम सम्बन्धी कठिनाइयों की वजह से जो बच्चे मुख्यधारा की शिक्षा की माँगों का सामना करने में असमर्थ हैं–उन बच्चों की मदद करने में Ignacio Estrada के ये शब्द हमारा मार्ग दर्शन करते हैं। इन बच्चों का स्तर अपनी कक्षा के अन्य बच्चों से कम होता है इसलिए वे अपने को अक्षम महसूस करते हैं और उनमें आत्मसम्मान और आत्मविश्वास की कमी हो जाती है। ऐसे बच्चों की मदद करने के लिए विद्या निकेतन स्कूल में हमने 12 से 15 वर्ष के बच्चों (सातवीं से दसवीं कक्षा) के लिए वैकल्पिक अध्ययन का एक विभाग खोला है। इसके द्वारा हम बच्चों की मदद करके समाज की बेहतरी में योगदान देना चाहते हैं। हमारे स्कूल में यह पहल पिछले 12 वर्षों से जारी है।

अकादमिक कठिनाइयों वाले किशोरों की जरूरतों को समझकर हम उनके सर्वांगीण विकास, सामाजिक – भावनात्मक अधिगम और रूहानी व मनोवैज्ञानिक खुशहाली पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। किसी भी किशोर को स्कूली जीवन से सिर्फ इसलिए वंचित नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि वह अकादमिक पाठ्यक्रम की माँगों को पूरा नहीं कर पा रहा है। एक शिक्षक होने के नाते हम यह बात जानते हैं कि विद्यार्थियों से जिस अकादमिक ज्ञान के अधिग्रहण की अपेक्षा की जाती है, उससे कहीं अधिक गहरा अधिगम स्कूल के वातावरण में उपस्थित रहने मात्र से हो जाता है। हमारा उद्देश्य ऐसे विद्यार्थियों को स्कूली वातावरण उपलब्ध कराना है जो अन्यथा स्कूल छोड़ देते या मुख्यधारा के अकादमिक पाठ्यक्रम की माँगों को पूरा न कर पाने के कारण बार–बार "फेल" होते। हमारे विद्यालय में ऐसे विद्यार्थी मुक्त विद्यालयी पाठ्यक्रम का अनुसरण करते हैं, स्कूल भी आते हैं और एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए कई कौशल सीखते हैं जैसे विभिन्न आयु वर्ग के लोगों के साथ बातचीत करने के लिए आवश्यक सामाजिक कौशल, व्यवहार कौशल, समाज की बारीकियों और अपेक्षाओं को समझने का कौशल आदि। ऐसा अधिगम स्कूली वातावरण में ही सम्भव है जिसमें बहुत कुछ सीखने का अवसर मिलता है।

इस तथ्य को सभी मानते हैं कि "बच्चे को अधिक उपलब्धियाँ तब हासिल होती हैं जब वह भीतर से सुरक्षित महसूस करे, उसे महत्त्व दिया जाए, उससे प्रेम किया जाए और जब वह खुद में विश्वास तथा खुद पर गर्व करे।" यही सब पाने में हम बच्चे की सहायता करते हैं। हमारे स्कूल का वातावरण यह सुनिश्चित करता है कि बच्चों को सामाजिक सम्पर्क, भावनात्मक संवर्धन और व्यक्तित्व विकास के अनेक अवसर उपलब्ध कराए जाएँ। हम यह मानते हैं कि हर बच्चा अद्वितीय है और उसमें विशेष सामर्थ्य है जिसे प्रस्फुटित होने का अवसर मिलना चाहिए। उन्हें अपने पसन्दीदा पाठ्येतर गतिविधि में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। हम अपने विद्यार्थियों को इस बात में सशक्त करने की कोशिश करते हैं कि वे सामाजिक और भावनात्मक रूप से सक्षम व्यक्ति बन पाएँ। प्रातःकालीन सभा, खेल के कालांश, खेल दिवस, वार्षिक कार्यक्रम, स्नातक दिवस आदि में जब ये विद्यार्थी मुख्यधारा के विद्यार्थियों के साथ मिलते–जुलते हैं तब एकीकरण और समावेशन भी हो जाता है। साथ ही साथ अकादमिक क्रियाकलापों के लिए उन्हें कम संख्या वाले बच्चों की कक्षा में पढ़ने और अपनी गति के अनुसार आगे बढ़ने का लाभ मिलता है, जहाँ उन्हें मुक्त विद्यालयी परीक्षा के लिए पढ़ाया और तैयार किया जाता है। हमारा उद्देश्य यही है कि वे स्कूल में उपलब्ध सभी सुविधाओं का लाभ उठाएँ जैसे स्कूल का बुनियादी ढाँचा, पाठ्य सहगामी क्रियाएँ या स्कूल का सामाजिक जीवन आदि और साथ ही अपनी माध्यमिक शिक्षा भी पूरी कर पाएँ।

अकादमिक कठिनाइयों वाले बच्चों के माता–पिता में अब जागरूकता और स्वीकरण बढ़ रहा है, इसलिए हमने इस अकादमिक सत्र से सातवीं कक्षा के 12 वर्षीय बच्चों को भी इस कार्यक्रम में शामिल किया है। हमारे बच्चों को जिन व्यावहारिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उनके लिए हम नए–नए समाधान और तरीके ढूँढ़ते रहते हैं। हम भली–भाँति जानते हैं कि अपने विद्यार्थियों को सक्षम बनाने के लिए टीमवर्क (टीम में विद्यार्थी उनके माता–पिता, शिक्षकगण और स्कूल शामिल हैं) कितना आवश्यक है और इसीलिए जब तक बच्चे हमारे साथ रहते हैं तब तक हम उनकी वृद्धि और विकास के हर कदम पर अभिभावकों को भी शामिल करते हैं।

हमारे विद्यार्थियों का आत्मविश्वास और आत्म–गौरव कैसे बढ़ता है?

हर सत्र में एक बार हम विद्यार्थियों को 1200 विद्यार्थियों और 100 शिक्षकों के सामने स्कूल सभा का संचालन करने का अवसर देते हैं। उन्हें पूरे स्कूल के सामने अपनी प्रतिभा दिखाने के अवसर दिए जाते हैं और वे मुख्यधारा के विद्यार्थियों के साथ स्वतन्त्रता दिवस व शिक्षक दिवस समारोहों में भी भाग लेते हैं। ऐसे हर प्रदर्शन के बाद उनमें उपलब्धि और सफलता का भाव उत्पन्न होता है तथा उन्हें अपनी क्षमताओं पर गर्व होता है एवं इस कारण से उनका भावनात्मक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आत्मविश्वास बढ़ता है। अकादमिक दृष्टि से देखें तो जब ये बच्चे अपने ऐसे साथियों के साथ मुक्त विद्यालयी पाठ्यक्रम का अनुसरण करते हैं जिन्हें भी अधिगम सम्बन्धी कठिनाइयाँ हैं तो उन्हें यह महसूस होता है कि राहें इतनी कठिन भी नहीं हैं।

हमारे स्कूल का वातावरण विद्यार्थियों की सफलता के लिए प्रारम्भिक सोपान है जो माध्यमिक शिक्षा पूरी करने में उनकी मदद करता है। हमारे विद्यार्थियों में से 99% विद्यार्थी मुक्त विद्यालय के माध्यम से दसवीं कक्षा की पढ़ाई पूरी करके वापस मुख्यधारा की शिक्षा में चले जाते हैं और यह बात हमें बहुत संतुष्टि देती है। हमारे पास आने के बाद जब हर विद्यार्थी जीवन में आगे बढ़ने के लिए कदम आगे बढ़ाता है तो हम खुशी और गर्व की भावना से भर जाते हैं।

हमारे यहाँ समावेशी शिक्षा की जो प्रणाली है वह भले ही उसके शाब्दिक अर्थ से भिन्न हो या अन्य स्थानों पर चल रही प्रणाली से अलग हो, लेकिन उससे हमारे विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों को बहुत लाभ हुआ है। पिछले कई वर्षों से अपने विद्यार्थियों का विकास, अनुसमर्थन, मार्गदर्शन और कोचिंग करते हुए हमने यह अनुभव किया और यही सीखा है कि **इस प्रकार का समावेशन भी उनकी क्षमता को प्रकट कर सकता है।**

References:

- The Heart of A Teacher, Paula Fox.
- Inclusion Summit 2013, Poonam Natarajan, Chairperson, National Trust

---

सरला मोहन राज विद्या निकेतन स्कूल, बेंगलूरु में वैकल्पिक अध्ययन विभाग की प्रधान अध्यापिका और परामर्शदाता हैं। उनसे saralamohanraj@yahoo.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल